News Expert
14h ·

गर्मियों में लौकी की उन्नत खेती, करें मार्च के प्रथम सप्ताह तक बुवाई:- डॉ अरविंद कुमार सिंह

कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के प्रसार निदेशालय के समन्वयक/ निदेशक प्रसार डॉ अरविंद कुमार सिंह ने *गर्मी के मौसम में लौकी की वैज्ञानिक खेती* विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है।उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने,खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। डॉक्टर सिंह ने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 - 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 - 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 25 फरवरी से मार्च के प्रथम सप्ताह तक सर्वोत्तम है। इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ सिंह ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। डॉ अरविंद कुमार सिंह ने बताया यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है। (डॉ खलील खान), मीडिया प्रभारी चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर।

Sign in to edit and save changes to this file.

देश-विदेश | लखनऊ और फैजाबाद से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | उत्तर प्रदेश

जन एक्सप्रेस

@janexpressnews | janexpresslive | www.janexpresslive.com/epaper

सत की

प्रो. नरेन्द्र मोहन
प्रायोगिक चीनी
स्थापना से छात्रों
ग में ऊर्जा
कम करने के
जा रही नवीन
रे में व्यापक
उन्होंने कहा कि
गन्ना प्रति दिन)
रखाने में, ऐसी
पर वेरिएबल
साथ अपनाने से
निट बिजली की

कैम्प में
ई जांच

ों को देखा गया
किया और उनकी
र दवाइया भी
ख्य रूप से संस्था
राकेश सिद्धार्थ,
ष कुमार, प्रदेश
कुमार, प्रदेश
ठाकुर, प्रदेश
ह यादव, प्रदेश
दस्य सुनीता
सचिव मो.
देश कार्यकारिणी
कुमार, प्रदेश
स्मृति, जिला
गौतम, प्रदेश
दस्य मोहित
नगर विधानसभा
नार गौतम, जिला
, जिला सचिव
कानपुर मण्डल
र्या, कानपुर मंडल
ार, गोविन्द नगर
गौतम, शुशील
ायसवाल, जीतू
सचिव अविनाश
क मौजूद रहे।

लौकी की वैज्ञानिक खेती पर एडवाइजरी जारी की

जन एक्सप्रेस/कानपुर नगर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय के समन्वयक/ निदेशक प्रसार डॉ. अरविंद कुमार सिंह ने रविवार को किसानों के लिए गर्मी के मौसम में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर एडवाइजरी जारी करते हुए बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने, खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा, खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। डॉ.सिंह ने बताया कि लौकी की खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक की जाती है। उन्होंने बताया कि लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30-35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिसका पीएच मान 6 से 7 होना चाहिए। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 25 फरवरी से मार्च के प्रथम सप्ताह तक सर्वोत्तम है। इसकी उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है । लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। डॉ. सिंह ने बताया किसान वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती कर 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त कर सकते है।

वर्ष 16 अंक 44 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, सोमवार 14 फरवरी 2022

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक
नगर छाया
आप की आवाज़.....

www.nagarchhaya.com
पेज -7

'लॉक अप' के टीजर में छा गईं कंगना राणा

गर्मियों में लौकी की उन्नत खेती करें, मार्च के प्रथम सप्ताह तक बुवाई : डॉ. अरविंद कुमार सिंह

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के प्रसार निदेशालय के समन्वयक/ निदेशक प्रसार डॉ अरविंद कुमार सिंह ने गर्मी के मौसम में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है उन्होंने कहा कि औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने,खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। डॉक्टर सिंह ने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 - 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 - 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 25 फरवरी से मार्च के प्रथम सप्ताह तक सर्वोत्तम है। इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ सिंह ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। डॉ अरविंद कुमार सिंह ने बताया यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।

Sign in to edit and save changes to this file.

कानपुर

14 फरवरी 2022 4

गर्मियों में लौकी की उन्नत खेती कर लाभ कमायें

❑ मार्च के प्रथम सप्ताह तक बुवाई आवश्यक-कृषि वैज्ञानिक

कानपुर, 13 फरवरी। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के प्रसार निदेशालय के समन्वयक/ निदेशक प्रसार डॉ अरविंद कुमार सिंह ने गर्मी के मौसम में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। डॉ सिंह ने बताया कि लौकी, कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है, जिसमें औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने, खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा,खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं। डॉ सिंह ने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30 - 35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने

किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान 6 - 7 हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 25 फरवरी से मार्च के प्रथम सप्ताह तक सर्वोत्तम है। इस की उन्नतशील प्रजातियां जैसे काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि प्रमुख उन्नतशील प्रजातियां है। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। डॉ सिंह ने बताया कि लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज 4 सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। डॉ अरविंद कुमार सिंह ने बताया यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं। तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त होगी, जोकि किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress

WORLD खबर EXPRESS

WORLD
खबर एक्सप्रेस
MID DAY E-PAPER

रविवार, 13-02-2022 अंक-43
www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

मार्च के प्रथम सप्ताह तक करें लौकी की बुवाई

सीएसए के प्रसार निदेशालय के समन्वयक/ निदेशक डॉ. अरविंद कुमार सिंह ने जारी की एडवाइजरी

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के प्रसार निदेशालय के समन्वयक/ निदेशक डॉ. अरविंद कुमार सिंह ने गर्मी के मौसम में लौकी की वैज्ञानिक खेती विषय पर किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। डॉ. सिंह ने बताया कि लौकी कद्दू वर्गीय महत्वपूर्ण सब्जी है। औषधि की दृष्टि से भी यह अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह कब्ज को कम करने, पेट को साफ करने, खांसी या बलगम दूर करने में अत्यंत लाभकारी है। उन्होंने बताया कि इसके मुलायम फलों में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, खाद्य रेशा, खनिज लवण के अलावा प्रचुर मात्रा में अनेकों विटामिन पाए जाते हैं।

डॉ. सिंह ने बताया कि इसकी खेती पहाड़ी क्षेत्रों से लेकर दक्षिण भारत के राज्यों तक विस्तृत रूप में की जाती है। उन्होंने कहा कि निर्यात की दृष्टि से सब्जियों में लौकी अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की लौकी के बीज के अंकुरण के लिए 30-35 डिग्री सेंटीग्रेड और पौधों की बढ़वार के लिए 32 से 38 डिग्री सेंटीग्रेड तापमान की आवश्यकता होती है। उन्होंने किसानों को सलाह दी है लौकी की खेती के लिए बलुई दोमट तथा जीवांश युक्त चिकनी मिट्टी जिस का पीएच मान छह-सात हो सर्वोत्तम होती है। उन्होंने बताया कि लौकी की बुवाई का सर्वोत्तम समय 25 फरवरी से मार्च के प्रथम सप्ताह तक है। इसकी उन्नतशील प्रजातियां काशी गंगा, काशी बहार, आर्का बहार, पूसा नवीन, पूसा संदेश, नरेंद्र रश्मि आदि प्रमुख हैं। उन्होंने बताया कि लौकी का बीज 2.5 से 3 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की आवश्यकता होती है। लौकी से अच्छी पैदावार लेने के लिए 50 किलोग्राम नाइट्रोजन, 30 किलोग्राम फास्फोरस तथा 35 किलोग्राम पोटाश की आवश्यकता होती है। उन्होंने बताया कि एक स्थान पर दो-तीन बीज चार सेंटीमीटर गहराई पर बुवाई करना चाहिए। डॉ अरविंद कुमार सिंह ने बताया यदि किसान भाई वैज्ञानिक विधि से लौकी की खेती करते हैं तो 400 से 450 कुंतल प्रति हेक्टेयर उपज होगी। जो किसान भाइयों के लिए लाभ एवं आय की दृष्टि से अच्छी है।